© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

कलिदासके नाटकोमें नारीचेतना

प्रो. जी. जे. देसाई
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
डी. सी. ॲम. ऑर्ट्स ओर कोमार्स कॉलेज
वीरमगाम, गुजरात, भारत

संसार में घर-गृहस्थी, पररवार, देश, समाज एवं घर के संचालन में मिहलाओं का महत्वपूणण योगदान रहा है । प्राचीन समय में जब पुरुष अहार सामग्री जुटाने एवं अत्मरक्षा के कामों में व्यस्त रहते थे तब समाज की व्यवस्था का संचालन, गृहस्थी का संचालन, बच्चों को ॲपनी सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कार देना सब काम नाररयाँ ही करती था । ईनकी शिक्षा समुचित व्यवस्था करती थी । वे पुरुषों के साथ वेद पढती पढाती थी । यज्ञ करती एवं करवाती, धमण – कमण करती । यही कारण था कक वे गुण कमण एवं स्वभाव में भी पुरुषों के समान ईन्नत हुअ करती थी।

नारी के प्रित सम्मान भाव अकद काल से कदखाआ पडता है । संस्कृत साहित्य के साहित्यकारोने भी ॲपनी रचनामें नारी प्रित अदरभाव प्रगट करते है । संस्कृत के मूधणन्य साहित्यकार कालिदासने भी ॲपनी रचनाओंमे नारीओं के प्रित सम्मानभाव बताया है । नारी की विशेषता कालिदास गुण, किया, ॲलंकार, वेशभूषा और ईसके सहज स्वभाव आन सब का चित्रण करता है ।

विमोवणशीयममें नारीचेतना –

कालिदासने विमोवणशीयममें नारीओं के प्रित ॲपना अदरभाव विस्तृत रुप से प्रगट ककया है । आस नाटक में नायिका ईवणशी, पटरानी औशीनरी, रंभा, चित्रलेखा, निपुणिका, चेटी, सहजन्या ककराती, यवनी और तापसी अकद स्त्रीओंका निदेश ही नारीओके प्रित ॲपना अदर प्रगट होता है । कालिदास स्त्रीओंकी रहन – सहन ईसका सौजन्यशील, दयालु, ईदार और ऋजु भाव से अकर्षषत हुअ है, और वे स्त्री सौंदयणका गुण-गान करके स्त्री इश्वर ॲमूल्य देन है यह कहना चाहता है । जब ॲप्सराओं को केशी दानव ॲपहरण करता है, ईस समय ॲप्सराओं अध्रा से अशक्त राजा पुरुरवा ॲपने वायवास्त्र से देवों का शत्रु केशी को पराजित करके वापस लाता है। दू सरी ओर आन्र ईवणशीको मुक्त करवाने के लिए चित्ररथ गंधवणसेना को लेकर जा रहा था । तब ईसे पता चला की पुरुरवाने ईवणशी और आसकी सखीको बचा लिया है । हेमकूट के चोटी पर सबका मिलन होता है । चित्ररथ ॲपने साथ राजा को आन्रको मिलने के लिए ले जाना चाहते है, लेककन बडी विनम्रतासे राजाने कहा कक ॲभी विमलने का ईंचत ॲवसर नही है । आस समय चित्ररथ सभी ॲप्सराको कहता है – आत आतो भवत्यः । आन शब्दोंमें चित्ररथने नारी प्रित अदर प्रगट ककया है ।

नाटक के तृतीय अॅकके विष्कम्भक में भरतमुनिरिचत नाट्यका अॅभिनय करने के हेतु ईवणशी को भी लक्ष्मी का पात्र और मेनका वारुणी का पात्र अॅभिनीत करती है, आससे पता लगाया जा सकता है कक आस युग में नारी मुक्त मनसे पुरुष की समान सभी किया में अॅपना योगदान देती थी यह भी नारी सम्मानका द्मोतक है ।

भूजणपत्र प्रसङ्ग में ईवणशी अॅपने प्रेमी के प्रित अॅपिन हृदयकी संवेदना शब्दोमें प्रगट करती है ।

स्वामिन्संभाविता यथाहं त्वयाऽज्ञाता
तथानुरक्तस्य यकद निम तवोपरर ।
ननु मम लुलितपाररजातशयनीये भविन्त
नन्दनवनवाता अॅप्यत्युष्णका शरीरके ।।

यह प्रणयपत्र रानी औशीनरी को दासी देती है । लेककन राजाने प्रेमपत्र विदूषक को रखने को कदया था, ईसकी खोज चल रहीथी तब रानी जिसकी खोज चाल रही थी वो पत्र रानी अॅपने हाथों से राजा को देती है, और विलाप नही करना एसा व्यंग्यमें बोलकर चलने लगती है, राजा मनाने की कइ कोशिश करता है लेककन वहु मानती नही है । तब विदुषक व्यंग्य विधान बोलता है तब राजा कहता है कक –

प्रियवचनशतोपि योषीतां दियताजनानुनयो रसादृते ।
प्रिवशित हृदयं न तिद्विदां मिणररव कृत्रिमरागयोजितः ।।

यहाँस्त्री का क्रोध, व्यंग्यवाली और अॅपना दृठसंकल्प कदखाइ देता है, पर वो अॅपने हृदयसे बहुत साफ कोमल होती है, ईससे समाजके प्रित अॅपना क्या दायित्व है ये भी कभी नारीके व्यंग्यवालो से प्रगट करता है ।

प्रियानुप्रसादनव्रत प्रसङ्ग में औशीनरी अॅपनी भूल सुधारने के लिए व्रत रखती है, और अॅपने स्वामी को जो स्त्री के प्रित अॅनुराग हो ईसे प्राप्त करने के लिए छुट्टीभी देती है, तब औशीनरीकी ईदारता नारीके प्रित सम्मान कइ ज्यादा बढोतरी करता है । चतुथण अॅंकमें नारी के बिना अॅपना जीवन शून्यव बताने के लिए किवने प्रकृति के साथ अॅपनी प्रिया का सायुज्य ककया है, वषाण, कोयल, मयूर, चिवाक, हंस हाथी, नदीमें अॅपनी प्रेयसीको खोजता है, वहाँ किव हट पात्रके चित्रण करके नारीके अॅनुपम सौदयण और गुणों का गुणगान करता है, और नारी सम्मान प्रगट करता है । पांचवा अॅंकमें ईवणशी की जुदाआ सुनकर भी वो हिल ईठता है । नारद का संदेशा सुनकर राजा अनंकदत हो ईठता है । नारत कां संदेशअ सुनकर राजा अनंकदत हो ईठता है, आससे समजा जा सकता है कक नारी मनुष्य जीवनको ककतना सुन्दर बना सकती है ।

अभिज्ञानशाकुन्तलमें नाररचेतना –

अभिज्ञानशाकुन्तलमें भी स्त्रीसंवाद बहुत जगह पर देखने को मिलता है । शकुन्तला, अनसूया, प्रियंवदा, गौतमी, तापसी, मेनका, सानुमती, ज्योत्ना वनदेवी पररचाररका, चतुररका, प्रितहारी, चेटी अकद पात्र स्त्रीस्वभाव तथा स्त्रीचाररत्र्य को प्रगट करता हैं ।

प्रथम अंकमें दुष्यन्त मृगया को मारने के लिए ईसके पीछे पीछे रथको चलाते चलाते तपोवन के तट तपोवनमें सौंदयणमूर्षत शकुन्तला और ईनकी सखीओंका संवाद राजा सुनते हैं । जहाँ अपने को रुबरु करने की जरुरत है, तब संवाद में बीच बीच में बोलता हैं । अनसूया दुष्यन्त का पररचय पूछती है, तब राजा कहता है, भिगनी जो पौरवराजाने धमाणिधकारी के रुपमें चूना है – वह मैं धमणकिया रुकावट के बिना चलती है कक नही वो देखने मै अया हाँ । यहाँ राजा भवित यः पौरवेण । राजाने जो भवित संबोधन करके सखीको बताया वो नारी सन्मानका द्मोतक है ।

आसके अितररक्त शकुन्तलाका राजाको देखकर राजाके प्रित ईसका प्रणयराग बढने लका था, तब शकुन्तला की प्रणय संवेदना देखकर ईनकी सखीयाँ शकुन्तला के प्रित विनोदवृति करके परेशान कर रही थी । तब कालिदासके समय में भी स्त्री मुक्त मनसे बह जगह खेल सकती, घूम सकती थी । वहाँ सखीयाँ शकुन्तला को अपने प्रेमी को प्रेमपत्र लिखने के लिए तैयार करती है । यहाँ स्त्री अपना भाव पत्रके रुप में प्रगट करती है तब नारीका भाव प्रागट्य किवने बताया है ।

नाटक के तीसरे अंक में राजा शकुन्तला का सेवक बनने कौ तैयार है –

कक शीतलैः क्लमिवनोकदिभरारणवातान्
संचारयामि निलनीदलतालवृन्तैः ।
अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते
संवाहयामि चरणावुत पताम्रौ ।।

तब शकुन्तला राजाको बताती है जिसने मुझे बडी की है ईनकी अपदाघिनी बनना नही चाहती । मैं स्वतंत्र नही हाँ । राजा शकुन्तला को बताता है कक कइ राजर्षष कन्याओंने गांधवण – विधसे शादी की हैं और पिताका अशीवाणद भी लिया है । यह स्त्रीओं को अपने पित चुनने की स्वतंत्रता थी वह बताता हैं । कफर भी कुठ गलत होता था तो भी पररवार कन्या के प्रित अच्छा व्यवहार करते थे ।

नाटकके चौथे अंकमे दुष्यन्तके विरह में शकुन्तला कामपीडित अवस्थअका अनुभव कर रही है । तब दो सखीऔने निति ककया कक यह बात ककसीको बतानी नही चाहिए । विकट पररिस्थित में भी दोनों ये रहस्य ककसी के साथ

प्रगट नही करती ये स्त्री – गौरवके समान है । चौथे अॅंकमे विष्कंभक के बाद शिष्य एक श्लोक बोलता हैं, वह नारी चेतनाकी दीपज्योति जैसा है –

अॅन्तर्षहते शिशिन सैव कुमुद्वति मे
दृष्टिं न नन्दयित संस्मरणीयशोभा ।
अिांप्रवासजिनतान्यवलाजनस्य
दुःखानि नूनमितमात्रसुदुः सहानि ।।

शकुन्तला की विदाइ की घडी अती है तब प्रकृति रुदन करने लगती है ईसका वणणन देखिए –

ईद्गिलतदभणकवला मृगाः पररत्यक्तनतणना मयूराः ।
अॅपसृपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रुजीव लताः ।।
कश्यप शकुन्तलाके बिदाइ की घडी में वृक्षो को कहता है –
पातुं न प्रथमं व्यवस्यित जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादस्ते प्रियमण्डनापि भवतां नेहेन या पल्लवम् ।
अद्मे वः कुसुमप्रसृतिसमये यस्या भवत्युस्तवः
सेयं याति शकुन्तला पितगृहं सवेरनुज्ञायताम् ।।

शकुन्तला की भावभरी बिदाइ की वेलामें कश्यप तपस्वी होने पर भी भावुक हो जाता है और कहता है कक नेह के कारण मेरे जौसे तपस्वी की दारुण अॅवस्था होती है तो पुत्री की बिदाइ की घडी में गृहस्थी की कैसी दुःखदायक अॅवस्था होगी ?

आतना नही अॅपनी बेटी को बार बार देखने का भी मन होता है और श्लोकमें वो भाव बताया है –

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यिन्तमप्रितरथं तनयं निवेश्य ।
भत्राण तदर्षपतकुटुम्ब भरेण साधं
शान्ते कररष्यिस पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ।।

नाटक के पाँचवे अॅंकमें कश्यपमे दुष्यन्त और शकुन्तलाके विवाह को स्वीकार लिया । शकुन्तला सगभाण होने पर भी कहता है – त्वमहणतां प्राग्रसरः स्मृतोऽसि नः शकुन्तला मूर्षतमती च सित्या । यहाँ भी नारीकी ककतनी सम्मानीय अॅवस्था बताइ गइ है । दुवाणसा मुनि के शापके कारण दुष्यन्त शकुन्तला को पचान नही पाता तब शकुन्तला कहती है, पहले अश्रममें अकर हथेलीमें चाँद बताकर अॅब तिरस्कार करना क्या ईचित है ? ईस समयमें भी स्त्री अॅपना मत और विरोध प्रगट कर सकती थी वो भी कालिदासकी नारी के प्रित अदर बताता है । शाप के

कारण शकुन्तला का अेस्वीकार करता है, ककन्तु शकुन्तला को दी गइ अेङ्गुली शिावतार तट पर रहनेवाले धीवर को रोहित मछलीके पेट से मिलती है और वह राजा को देता हैं । राजा को जब अेङ्गुली मिलती है तब अेपनी गलती का एहसास से दुःखी होकर कहता है –

सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते
ककमिप मनसः समोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतपसामेव प्रायाः शुभेष्विप वृयि:
स्रश्रमिप शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यिहशङ्कया ।।

यहाँ राजा शकुन्तला को धमणपित्न, कुलप्रितष्ठा जैसे सम्मानवाचक शब्दों से नवाजते है – वह राजा की नारी के प्रित करुणा, ईदारता और नारीका गौरव प्रगट करता हैं । आसके अेलावा राजा अेपने दोषो की माफी के लिए शकुन्तलाके पैरोमें वंदन करता है, ये बताता है कक आस जमाने मै भी नारीका अदर होता था । और अदशणयुक्त अेच्छे मनुष्य प्राणी के रुपमें बहुमान मिलता होगा ।

आस प्रकार कालिदासने अेिभज्ञानशाकुन्तलमें नारीका गौरव प्रगट ककया हैं ।